Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Tul. 5
(3. D. 25)

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Hanumān-bāhuka.

Hanuman Bahuk

हनुमान बाहुक॥

तुलसीदासकृत॥

जिसके

नियम कर पाठ करने से अभिलाष पूर्णता पूर्व्वक आरोग्यता और राज्य में शत्रु पर विजय होता और सर्व्वांग रोगनाश और भूत प्रेत पिशाच भयनिवृत्ति होती है॥

वही

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखानेमेंछापागया

फरवरी सन् १८८३ ई०॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ हनुमान बाहुक ॥

दोहा । श्रीरघुबरहि प्रणामकरि सहितलषण हनुमान । राखिहृदय बिश्वासदृढ़ पुनि पुनिकरौं प्रणाम १ भौमबार आदिक पढ़ै जोनर सहित सनेह । रुजसंकट व्यापैनहीं बाढ़ै सुखधनगेह २ शुचिसनेम पढ़िहैं जोनर निरुजगात बलधाम । ह्वैहैंरति तुलसीश पद यशपैहैं सब ठाम ३ ॥ सवैया ॥ श्रीराम कृपाल बिराजतमध्य महाछबि धाम गहे धनुबाना । बामदिशा महिजा सुठिसुन्दरि दच्छिणओर लषणबलवाना । चामरपाणिलियेप्रभुकेढिग शोभितवायुतनय हनुमाना । तुलसीहृदये धरुध्यानसदा भ्रमसंशय त्यागिकहौंपरिमाना ४ राखुप्रतीतिहृदयकरि प्रीति अभीत कपीश चरण अनुरागू । शोचदुराइ सुनाइ बिनय तुलसी मनभावत सोबरमांगू । मोह नशावन बनचररूप उलंघत पैनिधि बार न लागू । गावतहीं यश बायु तनय रुजपुंजहरै दलदोषअभागू ५ काहूभरोसोहै बाहन को कोउबंधवकेबल जोरदिखावै । काहूकेरूप स्वरूपधनो अति भूपनकेढिग बैठनपावै । काहूके द्रव्यको गर्बघनो अतिचातुरह्वै चतुरंग नचावै । मेरेतोएक तुहीहनुमान्हनो किनवोहि जोमोहिंसतावै ६ ॥ छन्द ॥ जयति हनुमान बलवान् पिंगाक्ष शुचि कनकगिरि सरिस तनरुचिरधीरं । अंजनीसुअन सियराम प्रियलंकदल निशचरकटक बिकट बीरं । दहन शक्रारिबन महाबुध ज्ञानघन सुयशकहि निगमसब सुगतिधीरं । समुझिभुजजोर करजोरितुलसीकहै हरऊ दुख दुसह भयबिषम पीरं ७ ॥ छप्पै ॥ स्वर्णशैल संकाशकोटि रबितरुण तेजघन । उरबिशाल भुजदंडचंडनख बज्र बज्रतन । पिंगनयन भृकुटी कराल रसना दसनानन

कपीशकेश कर्कस लँगूर बल दूलबल भानन। कह तुलसि
दास बसजासुउर मारुतसुत मूरति बिकट। संताप पाप
तेहिपुरुषकहुँ सपने हुंनहिं आवतनिकट ८ ॥ कबित्त ॥
करम क पाप कितापकिधौंआपहुतेबाहुँशीशपीर सोतो
महादुखदायीहै। यंत्र मंत्र टोटकादि औषधिअनेककीने
घटत न नेकुरुानो औरबलपाईहै। तुलसीकहत करजोरि
छलछांड़िनाथ तुमते न बलीजग औरअधिकाईहै। बिनय
मानि महाबीर दूरिकीजै शीशपीर रामदूततेरोयश सर्ब
बेदगाईहै ९ रामकार्यलागि अवतारलीने कौशराढ़ जन
की सहाईहेतु देर न लगाइये। शीशचास पूरेकाम आठ
याम लेतनामसंपति कृपाकरिरोषबिसराइये। दासशीश
पीरबीर कालनेमि समजान बायुपूत तुमते लपेटिकै भँवा-
इये। डाटिकै चपेटिमारि दूरिडारि कौशनाह पुण्यबाहु
तुलसीके शीशढिग लाइये १० पापके प्रभावकी कि कर्म
के स्वभावकी कि कालके करालकी कि प्रेरीकाहू रोस
की। यंत्र मंत्र ओटकी कि दुराचार गोटकी कि पूर्बद्विज
द्रोहकी कि अघ ओघवलीशकी। आन हनुमान्कोशपथ
बलवान्की दोहाई कपिधीशकी जोरहै पीरशीशकी ११
सवैया॥ आरतबैन पुकारतही कपिनाथ न नेकु अबार ल-
गाये। रघुबरदूत अदूतबली जनहेत बिशाल लँगूर लफाये।
शीशकीपीर निशाचर लंकिनि समुझि समेटि पछारि भँ-
वाये। गातसुभाय भयेतबही जबहीं तुलसी हनुमान मना
ये १२ ॥ सवैया ॥ लोचनपीर प्रवेशकरै तबपण्डितलोगसुनो
परिमाना। साधनमूल बिचारिहिये करुमारुत नन्दनके
पदध्याना। होइहि लोचन शुद्ध सुहावन कूटहिपाप व्य-
थाबलवाना। रामकृपाबलपाइ प्रतीति सदैवभजै तुलसी
हनुमाना १३ ॥ कबित्त ॥ पूर्बकुचालकी करालबड़ी नयन
पीर भागु भागु परतीत मेरेबर बयनकी। नहींतो सजाइ
तोहिं देहिंगे समीरसुत कबरी न होसिबानीज्ञानी ज्ञान
ऐनकी। तुलसी समीपरहै रामदूत बीरबांको बिरद ब-

खानै वेदजनसुख दैन की। आनिरामदूतकीशपथ बायुपत
की दुहाई बुधसैनकी जोरहै पीरनयनकी १४ मारुतनंदन
के पद ध्यावत जन्मअनेक रचित अघजाई । नयननकेढिग
पीर न आवहि आगम वेद पुराण सुहाई। नूतन निर्मल
होहिसदा निरखे दृगदुष्ट डरै समुदाई । पाइप्रतीति स-
प्रीति हृदय हनुमानभजे तुलसी सचुपाई १५ अपयश औ
रनके सुनते तब नेकनहीं मनमें पछिताने। लोभते चोभते
रोषहुते अपकार परार कियेहितजाने । तासु प्रभावते
पीर करालखगीअवणनढिग आयसुठाने। लखिनिजदास
दुखी निजदूत बली तुलसीढिग आय तुलाने १६ कर्मकेप्र-
भावकी कि कालके स्वभावकी कि रोषके प्रभावकी कि
विप्र अपमानकी। परनारि नेहकी कि बीचगेह भोगकी
कि गवनी तुम धोखेप्रेरी काहुअज्ञानकी। तुलसीपुकारि
कहै भागुरी निगोड़ीपीर अवण समीपदेखु बाहँ बलवान
की। आनकपिराजकी शपथ सबसाजकी दोहाई हनु-
मानकी जोरहैपीर कानकी १७ क्रूर कुजातिन कानर्निके
ढिग व्याधिरही मानो रावणरानी। अंजनी नंदनके पद
ध्यावत दूरिपराई लजाइ डिरानी। अवणन शूलन व्यापि
रही सुकहौं प्रणरोंपि सुनी नर जानी। मानिप्रतीतिभ-
जो तुलसी सहिनाम भलो हनुमानसुदानी १८ दशनकी
व्याधिभई छाया ग्रहनी समानभेष तजै घटैनडरै काहुआ
नको। कहौंबारबारही पुकार सुनो ज्ञानीलोग विनय
सुनावो बेगिवीर हनुमानको। करैंगेनहीं अबार नाथहैं
उदार रामदूत भलेजानो रीति प्रीति ध्यानको। हरैंगे
विषमपीर राखिकै प्रतीतिधीर तुलसी हृदय मांझको
शल बलवानको १९ पूरब अघमोढ़की किधौं रोष ढोट
कोहै किधौंभई बड़ेविप्र वंशकेदुरावसों। भेषजनमानेहू ह
ठीलोबड़ो येतेबार दीनोधोषे क्रूरकर्मके प्रभावसों। अब
शिशु भागुबेगि तुलसी पुकारिकहैं नातरु गहैंगे कीशईश
बलभावसों। मारैंगे पछारितोहिं लंकिनी ज्योंजानि

डारिदैहैं दूरिकै हलुमके लफावसों २० कुलके कपटकी कि मोहके दपटकी कि रोषके झपटते प्रकटभईपातकी। बिप्रमन भंगकी कि बसे नीच संगकी कि साधुसों बिवाद कीनो झूठीहठि बातकी। तुलसी कहियेते संभव तरद रोम चव भागु बानीजानी वायुजातकी। आन हनुमान की शपथ बलवन्तकी दोहाई महाबीरकीजोरहैपीर द-न्तकी २१ कौनसुनै बिनती जनकी तब मारुतनंदन कीन उबारा। बाहु बिशाल पसारि कृपाकरि शीलनिधान सु-जान उदारा। दूरिकियो रदकोरुजको सुखभूरिदियोयश बेद प्रचारा। शोचबिहाय भजोतुलसी हृदयं कपिनाथके रामपियारा २२ करम कराल कंभ भूमिपालके भरोसे वाकी भगनीसो काहूते न डरैगी। बड़ी बिकराल भाल घातिनी न जातकहि बाहु बलकल छबीलछोटे छरैगी। आईहै बनाइबेष बपुत बिचारिबप पापजाइ सबही गुणी के पाले परैगी। पूतना पिशाचिनी ज्यों कपिकान्ह तुलसी की बाहँ पीर महाबीर तेरे मारे मरैगी २३ काल की करालता करम कठिनाई किधौं पाप के प्रभाव की सुभावबाब बावरे। बेदन कुंभाति सो सही न जाति राति दिन सोई बाहु गही जोगही समीर डावरे। लायोतरु तुलसी तिहारो सो निहारि वारि शोचिये म-लीन भयो तिह्लंताप तावरे। पूतनी को आपनो परायो को कृपानिधान जानि पावत सबही की रीतिसम रावरे २४ भालकी के पालकी कि रोषिकी त्रिदोषकी है बेदन बिषमपाप तापछल छाहकी। कालमंत्र कूटकी कि यंत्रमंत्र बूटकी पराहि पावनी कुली मलीन माहकी। पाइहो स-जाइतोहिं कहत बजाइबोहि बावरी न होहिबानी जा-नीकपि नाहकी। आन हनुमान की दोहाई बलवान की शपथ महाबीर की जोरहैपीर बाहकी २५ आपनेही पा-पते त्रितापते कि आपते सो बाढ़ीहै कि रोदन सो सही नहीं जातहै। औषधि अनेक यंत्रमंत्रटोटकादि किये बा-

दिभये देवता मनाये अधिकातहैं। करतार भरतार हर-
तार कर्मकालको है नमनाल जो चमान इततातहै। चेरो
तेरो तुलसी तू मेरोकह्यो रामदूत ढीलतेरी बीरमेरी
पीरसों पिरातहै २६ सिंहका संहारि बलसुर साधुघरि
छललंकिनी पछारि मारी बाटिका उजारीहै। तोरियम
कातरी मंदोदरी ढढोरी आनी रावन की रानी मेघनाद
महतारी है। लंकही प्रजारि अरु मकरी बिदारि बार
बार यातुधानी धूनिधानी करिडारीहै। ढीलबाहँपीरकी
निपटरूपी महाबीर कौनके सकोच तुलसी के सोवभारी
है २७ तेरीबाल केलिबीर सुनिसहमत धीरहै न शरीरसु-
धि शक्ररवि राहुकी। तेरी बाहँ बसतबिशोक लोकपाल
सबै तेरोनाम लियेरहै आरत न काहुकी। सामदाम भे-
दविधि बेदहू लवेदसिद्धि हाथकपि नायक के चो-
टीचोर साहुकी। आलस अनख परिहास की सिखाई
है येतेदिन रहीपीर तुलसी के बाहुकी २८ टूकनि को
घरघर डोलत कंगालबोलश्यों कृपालतन पालपायो यो-
सोहै। करिहै संभार सार अंजनी कुमारबीर अपनो बि-
सारिहै नतमेरेही भरोसोहै। इतनो परेखो सबभांति स-
मरथ आजु कपिराज साँचिकहौं को त्रिलोक तोसोहै
२९ लोक परलोक त्रिलोकन बिलोकियत तोसोंसमरथ
चषचारिहू निहारिये। कर्मकाल लोकपाल अगजग जी
वजाल नायहाथ सबनिज गहिमो बिचारिये। बासदास
रावरो निवासतेरो जासुउर तुलसी को देवदुखी देखि
यत भारिये। बाहु तरमूलबाहुशूलकपिकछिनेलिउपजीस
केलि कपिकेलिही उखारिये ३० रामको सनेहराम
साहस लषन सियराम की भगति शोकशंक निवारिये।
मूदमर्कट रोमवारि निधि हेरि हारेजीवजामवन्त को
भरोसोतेरो भारिये।कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेमपावै सु-
थल सुबैलभाल बैठिकै बिचारिये। महाबीर बाँकुरे बराका
बाहुपीर क्यौंन लंकिनी ज्यौं लातघातही मरोरि मारि-

ये ३१ देइदेव दनुजमुनि सिद्धिनाग छोटेबड़े जीवेजेते चे-
तन अचेतहैं। पूतना पिसाची यातुधान बाम रामदूत की
रजाइमाथे मानिलेत हैं। घोरयंत्र मंत्रकूर कपट कुयोग
रोगहनुमान आनसुनि छाड़त निकेतहैं। दोषदीजेकर्म
को प्रबोध कीजै तुलसी को शोधकीजै तिनको जो दोष
दुखदेतहैं ३२ तेरेबल बागरति जीतेराम रावण सो ते-
रोघाले यातुधान भयेघर घरके। तेरेबल रामराज किये
सब सुरकाजसकलसमाजसाज साजेरघुबरके। तेरेगुनगान
सुनि गीरवान पुलकत सजल बिलोचन बिरंचिहरिहरके
तुलसी के कांधपर हाथफेरु कपिनाथ बूझिये न दासदुखी
तोसेकउ हरिहरके ३३ पालोतेरो टूककोपरेहू चूकमू-
कनि कूरकौड़ी दुइकोहौंसिज और हेरिये। भोरानाथ
भोरेहौ सरोषहात थोरेदोष पोषतोष थापि आपनो न
अवडारिये। अबतौहौं अबुध अवलम्ब आन राखत न बू-
झिये बिलम्बमेरे तोरिये। बालक बिकल जानि कीजे प्रेम
पहिंचानि तुलसीके बाहँपर लम्बीलूम फेरिये ३४ उपपेथ
पथिथरथापि उथपनहार केशरी कुमारबल आपनो सँभा
रिये। रामके गुलामनीको कामतरु रामदूत मोसेदीन
दूबरो को तनकीअतिहारिये। साहिब समरथतो सो
तुलसी के माथपरेसोऊ अपराध बीरबीजकधी मारिये।
पाथर बिशाल बाहुबल बारिचर कर मकरी जो पकरी
वो बदन बिदारिये ३५ अथर्वीमर्दन कानबमाये दशा
नन भासनहारे। बारिदनाद अकंपिनो कुंभकरनसोकुंत
रकेहरीवारेरामप्रतापहुताशनकोछवोपच्छसमीरदुलारे
पापते आपतिहूते सदातुलसी केहमारेपवारे ३६ रामगु-
लाम हितू हनोमान गोसाइँ सदा अनुकूलो। पालेहौ
बालजौ आषर दोइ पितु मातुजो मंगलमोद समूलो। बाँ-
हकी बन्दन बाहँपगार पुकारते आरत आनन्द भूलो।
श्रीरघुबीर निवारियेपीररहौरखवार परीरटिलूलो ३७
हनुमान क्ष्पाल लाड़िले लषनलाल भावते भरत्थकीजै

सेवक सहायजू। बिनती करतदीन दूबरी दयाल मोसो बिगरेते आपुही सुधारिलीजै भावजू। मेरो साहिबि नी सदाशीशवर बिलसत देवी पवनदास का दिपाइ अन पायजू। षीभइमे रीभवे बातराम रीभतुहै सीभवझ रा-जाको दुहाई रघुराइजू ३८ मनको अगमतन सुगमकिये कपीश काज महाराजके समाज साज साजे हैं। देव बन्दीछोर रनजोर केशरी किशोर तुम जुगते राइ वीर देवीराजे हैं। बीरबर जोरघटो नार जोर तुलसी को ओर सुनि सकुचानेसाधु बलगन गाजेहैं। अंजनो कुमार सार कीजै संभार मोहिं बीगरी सँवारी हनुमान के नेवाजे हैं ३९ घेरि लिये रोगनी कुयोगनी जीवासर सजल घनघटा धुकीधाई है। बरषत बारीपीरो जारिये ज-वास जो सरोषबिन दोषधूम मूल मलिनाई है। करुणा-निधान हनुमान महाबलवान हेरिहँसीहांकिफुकिफौज लौ दुहाई है। खावेझसे तुलसी कुरोग ये दुराथकसिनि केशरी कुमार बीरराखीबरआई है ४० चेरोराम रावरो सुयश सुनि तेरोहरि आपतरआइरहौ सुरसरितोरहौ। बामदेव रामको स्वभाव शील जानियतु नतौनेझजाना जिय रघुबीर भोरहौ। आंधी भूत बेदन बिषमहोत भूत-नाथ तुलसी बिकलपाहि पवन कपिरहौ। मारीयेतौ अ नयास काशीबास पासफल शियाई ऐसी कृपाकरि नि-रुज शरीरहौ ४१ जीबेकी न लालसा दयाल महादेव मोहिं मालुमहैतोहिं मरिबेईको रहतहौं। कामरिपु रामको गुलामनको कामतरु अवलम्ब जगतये तेरोई स-हतहौं। रोगभय भूतियों कुसूतभये तुलसीको भूतनाथ पाइपद पंकजगहतहौं। ज्याइबतोजानकीजीवनजनजानि मारिबे चौमांगी मीच सूधी कहतहैं। ४२जीवैजनजानकी जीवनको जनकहाइ मारिबेको बारानसी धारिसुरसरि को। तुलसीके दुहंहाथ मोदक प्रमोदक है ऐसो ताहि सो वजानि बारिहैं न लरिको। मोकोभूठो साँचोलोग

रामको कहत सबमेरे मनमानहै न हरको न हरिको। भारीपीर दुसह शरीरते बिहालहोत सोऊरघुबीर बिना दूरिसकै करिको ४३ भूतभव भवति पिशाच भूतप्रेत प्रिय आपनो समाजशिव आपुनीके जानिये। नानाबेष बाहन विभूषण वसन बास खानपान बलि पूजा बिबिधि बखानिये रामकेगुलामनकीरीतिप्रीति सूधीसबसबकोसनेहसबही को सनमानिये। तुलसी की सुधरै सुधारे भूतनाथही के मेरे मायबाप गुरुशंकर भवानिये ४४ सीतापति साहब सहाय हनुमानजीत उपदेश को महाशभात गुरुबो। मानस बचनकाय शरणतिहारेपाइ तुम्हरो सुयश गाइआबो मन सरबो। ब्याधिभूत जनित उपाधि काहू खलको समाधि कीजै तुलसी को जानिजन फुरबो। कपिनाथ रघुनाथ भोरानाथ भूतनाथ रोगसिंधु क्योंन डारियेत गाय पुरवो ४५ सानुज सरीर सानुकूल शूलपाणि लोकलोक पाल सकल लषण रामजानकी। लोक परलोक को बिशोक सो चिलोक ताहि तुलसी तमाय कहा आनगिर वानकी। केशरी किशोर बन्दि छोरकै निवाजे सबकीरति बिमलकपि करुणा निधानकी। बालक ज्यों फलिहै अपाल मुनिसिद्धि ताकोजाके हियहुलसीत हांक हनुमान की ४६ बाहुक सुबाहुनी चलीचर मरीच मिलिजूह खीरके सुजान रोग यातुधानहै।रामनाम जपयोग सालुरागुकीयो चाहो कालके भूतदूत कहीमेरो तानिहै। सुमिरे सहाय रामलषण अखर दोऊजनिके साके साके समूह जगत जगत जहानके। तुलसी संभारि ताड़कासंहारि मारिभट बेधवर मदसेव भाइतान वानहै ४७ कहौ हनुमानसो सुयश राइ सो ठपा निधान शंकर सो समाधान सुनिये। हरष बिषाद रागदोष भईबिर बिरंचिसब देखियत दुनिये। माया जीव जगजालकरम सुभावके करैयासमभेद कहैसांची मन गुनिये। उनते कहो न होइ हाहाकै बुझाइ सोइहीहू रहौ मौनहूव यौसोजानि लुनिये ४८ जानत जहान ह-

नुमानके निवासउर हनुमान बलबोले दासनबिसारिये॥ दयायुत तुलसीको कहाकहूं चूकपरि साहबसुभावकपि समुझि सँभारिये। अपराधी जानिमोहिं शासति सहस कीजै मोदकनि मरैताहि मारिहैं। साहिब समीर के दुलारे रघुबीर जीके बाहुपीर महाबीर बेगही नि-वारिहैं ४९ कोउ करै बलि देवदवाईन कोउकरै गुनते चतुराई। कोउकरै बहुभांतिते भेषज भांति अनेक सयान बुलाई। सत्यकहौं लिखिकागदकोरनि मेरेनहीं कछुऔरउपाई। कर्मबचा मनसाहै सदा तुलसी के तुही हितुही कपिराई ५० मानलियो जनकी बिनती अति दीनदयाल कपिनाथ। दूरिकियो जनकी रुजजोरतेही छण फेरिकृपाकरिहाथ। बाहुव्यथा नहिंव्यापहि ताकहँ जो सुमिरै हरिकेगुणगाथ। पाइप्रतीति सदातुलसीभजु बायुतनय रघुनायकसाथ ५१तात मातुद्रोहकीकिबिप्रबंश कोहकी किपरनारी उरलायेधोषेकहुरातिकी। गुरुसों बिरोध कीनो अशनअसीभकी कि हरिजन बिमुखगये भाव अज्ञातिकी। मृषासाखी भरेकी कि परधन हरेकी कि कबहूँके लोभकी कि परधन घातीकी। तुलसी कहत करजोरि सुनो महाबीर बेगिहरौ एतेसंभवितपीरछाती की ५२ रचिकै सुबेषठारौ संतनि द्विजन किधौं मित्रसों बिरोध कीनो लोभगी घातीकी। किधौं कुलवन्ती नारि घरसों निकारि दीनी प्रीतिमानि चेरिहूँते अतिनीच जातिकी। तुलसी कहत किधौं कुलके कलंक कीन्हे धोखे मेरी आईकहूं दुष्टद्विज घातकी। पापनी निशाचरी सी जानिकै कृपानिधानमहाबीर दूरकीजे पीरबड़ीछातीकी ५३ जानीनहींबाततना कोइतनकोव्याधि महादुखदाई। कर्मके प्रभावकी भोगनिते यहपापिनीकोहूकेप्रेरेते आई। भेषजयुक्ति कियेसुठिबाढ़तकूटहिबेगसोएकउपाई। करौमन ध्यानभजोहनुमान सदातुलसीजनहोत सहाई ५४ बाहुपीरपेटपीर मुखपीरजरजरा सकल शरीर पीर

भईहै। देवभूत पितर करम खलवासीमोहीं पर दवरी दमानकसी दईहै। हौंतोबार बारही बिकानो-बिनमोलहो बाटरामनामकीललाटलखिलईहै। कुम्भजकेकिंकर बिकलबूडे गोरषनि हाइ हाइ रामराम ऐसीकह्यं भई है ५५ बालपनसूधामनराम सनमुख भये रामनामलेत मांगिखात टूकटाकहौं। जहांपर मूअल तहांखेम कुशल निशोच धमधूसर अकासाषा का कहौं। परलोक रीतिमो प्रतीति प्रीति रामसो न मोह बशचढ़ै तोरितर कि कराकहौं तुलसी गुसाईं भयो भोरेदिन भूलिगयो ताको फल प्रगट पावत परिपाकहौं ५६ सबअङ्गहीन सबसाधन बिहीन मनबचन मलीन कूलकाम करतूतिहै। बुद्धिबल हीनभाव भगतिबिहीन सबज्ञानगुणहीनदीन भागीह्रबि भूतिहै। तुलसी गरीबनि कीगाइयेमहाराजरामनामलेत बैठबिमल बिभूतिहै। प्रेमराम नामसों प्रतीति रामनाम सों प्रसाद रामनामके पसारिपायँ सूतिहै ५७ छप्पै॥राम मात पितुबन्धु सुजन गुरुपूज्यपरम हित। साहिबसखासुजानहनातापुनीतचित। देशकोशपरिवार घरधिधनधाम धरमगति। राजकाजसबसाजभांतिराजतसमाज अति। स्वारथ परमारथसकल सुलभरामते अमितफल। कहतुलसिदास अबसब दिननि एकरामते मोरभल ५८॥

इतिश्रीहनुमानबाहुक संपूर्ण॥

शुभमस्तु भूयात्॥